

Topic 31

इल सान्धि रूप प्रकारा 2.

पुमः ख्यम्पर ।

अम्परै खमि पुमौ सः । पुंस्कोकिलः ।
पुंस्कोकिलः ।

रूप वनने पर कुप्वोः - ० ये विसर्ग के स्थान पर जिह्वाभूलीय प्राप्त होता है, किन्तु सम्पुङ्गानाम - ० कारिक से उसका बाध हो जाता है, किन्तु विसर्ग के स्थान पर सकार हो 'पुंस्कोकिलः' और 'पुंस्कोकिलः' रूप सिद्ध होते हैं ।

नश्धव्य प्रश्नान् ।

अम्परै धावि नान्तस्य पदस्य तः ।

यद्य चकिन् त्रायस्व में धक् - त्कार आया है और उसके पर्याय अम - रकार की है। साथ ही यह नकार 'प्रश्नान्' शब्द का भी है। अतः प्रकृतसूत्र से इस नकार को 'र' (र) हो 'चकिन् त्रायस्व' रूप बनता है। इस स्थिति में पूर्ववत् अनुनासिकदेश, अनुस्वारागम तथा विसर्ग-आदेश है।

विसर्जनीयस्य सः ।

खरि । चकिंसाप्स्व, चकिंसायस्व । अप्रश्नान् किम्-प्रश्नान्तनोति । पदान्तस्येति किम्-हन्ति ।

नृन् प ।

नृन् इत्यस्य रुवा प ।

कुप्वोः ऋक् ऋक् ऋक् ।

